निराली हड्डी

विलियम स्टीग, हिंदी : विदूषक

THE AMAZING BONE

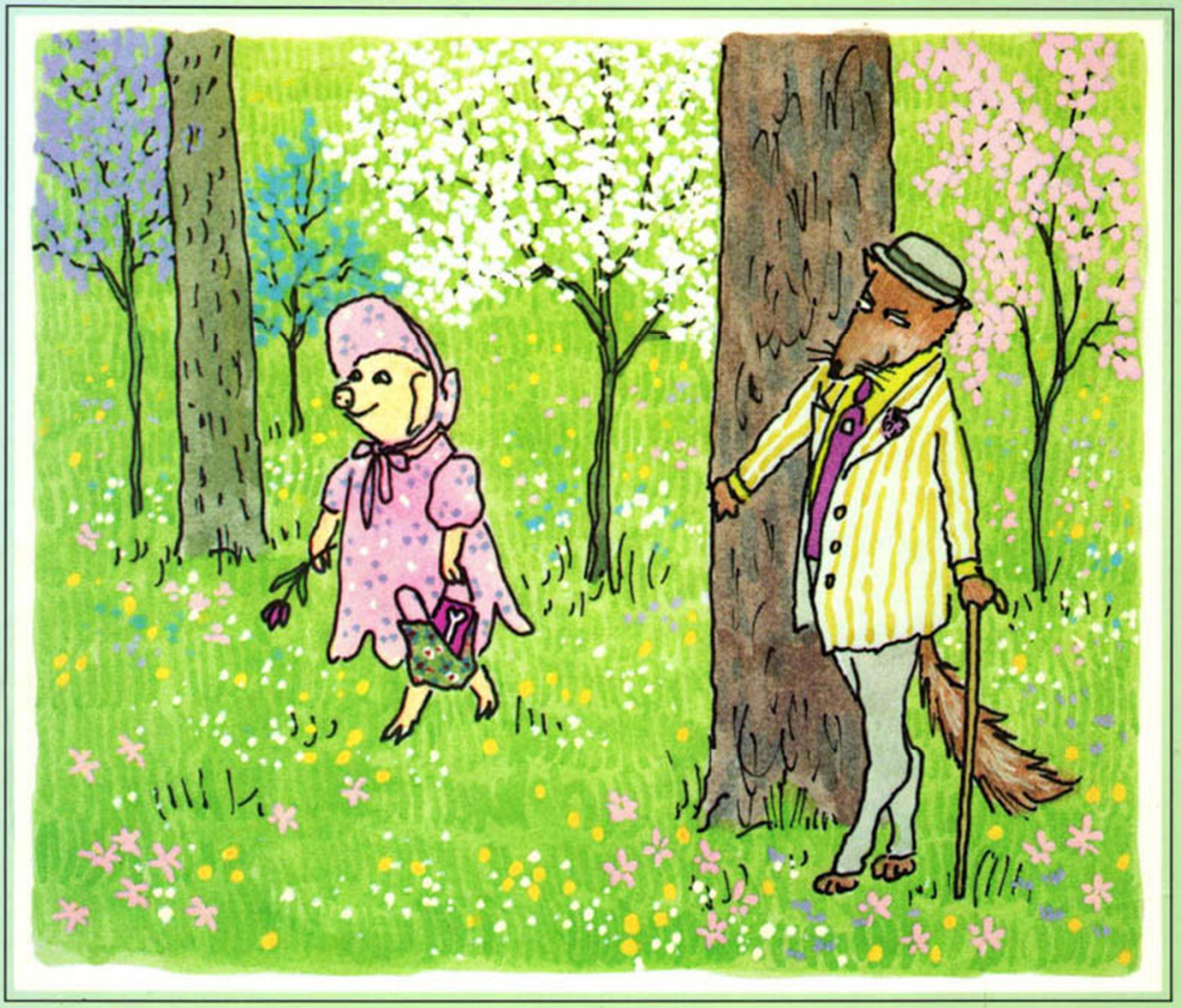

WILLIAM STEIG

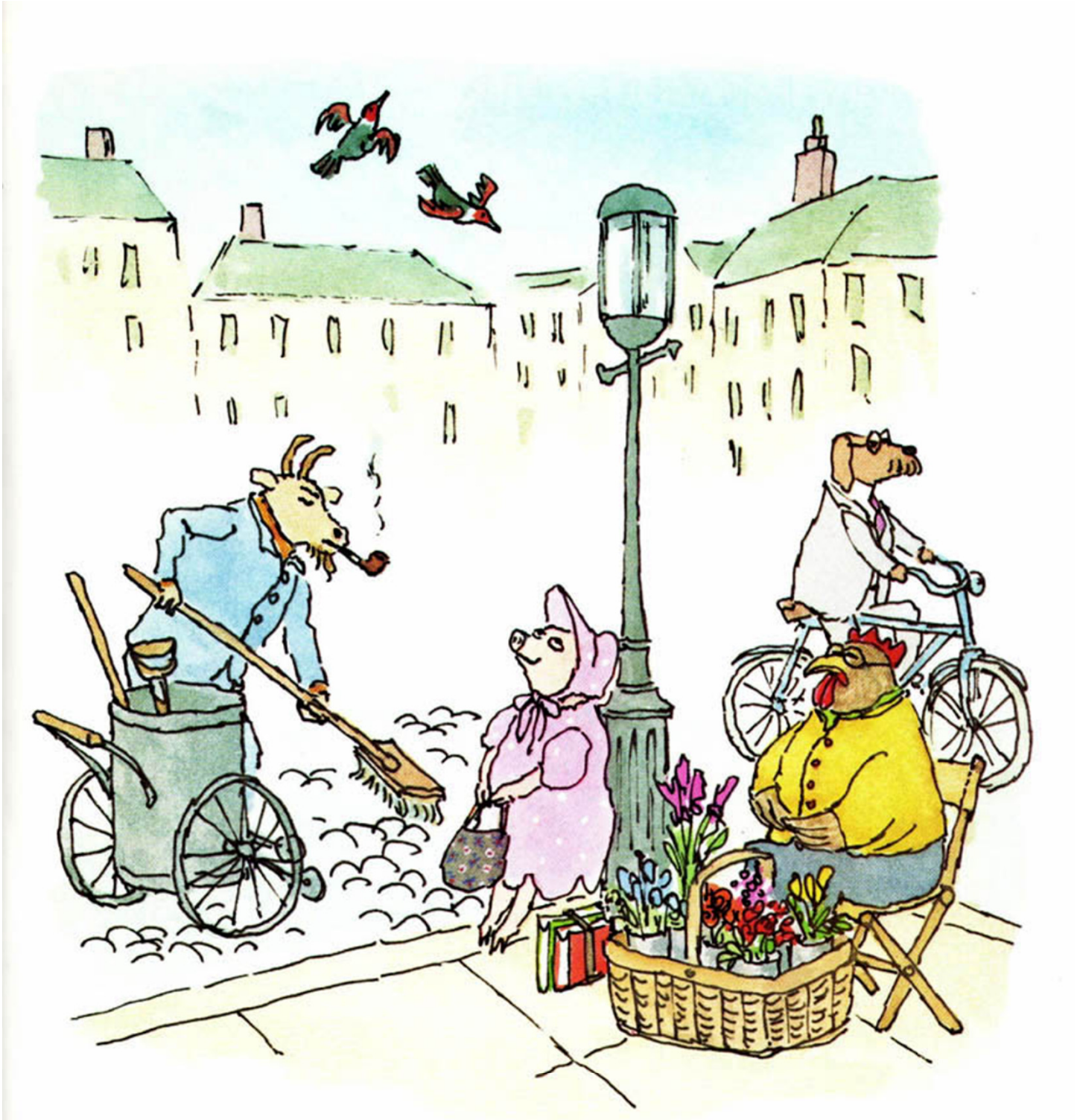

बड़ा सुन्दर दिन था. इसलिए स्कूल से सीधे घर जाने की बजाए पर्ल थोड़ा इधर-उधर घूमती रही. वो शहर में बड़ी उम्र के लोगों को देखती रही. बड़े लोग क्या काम करते हैं? वो उसने देखा. शायद एक दिन वो भी, वैसा ही कोई काम करे.

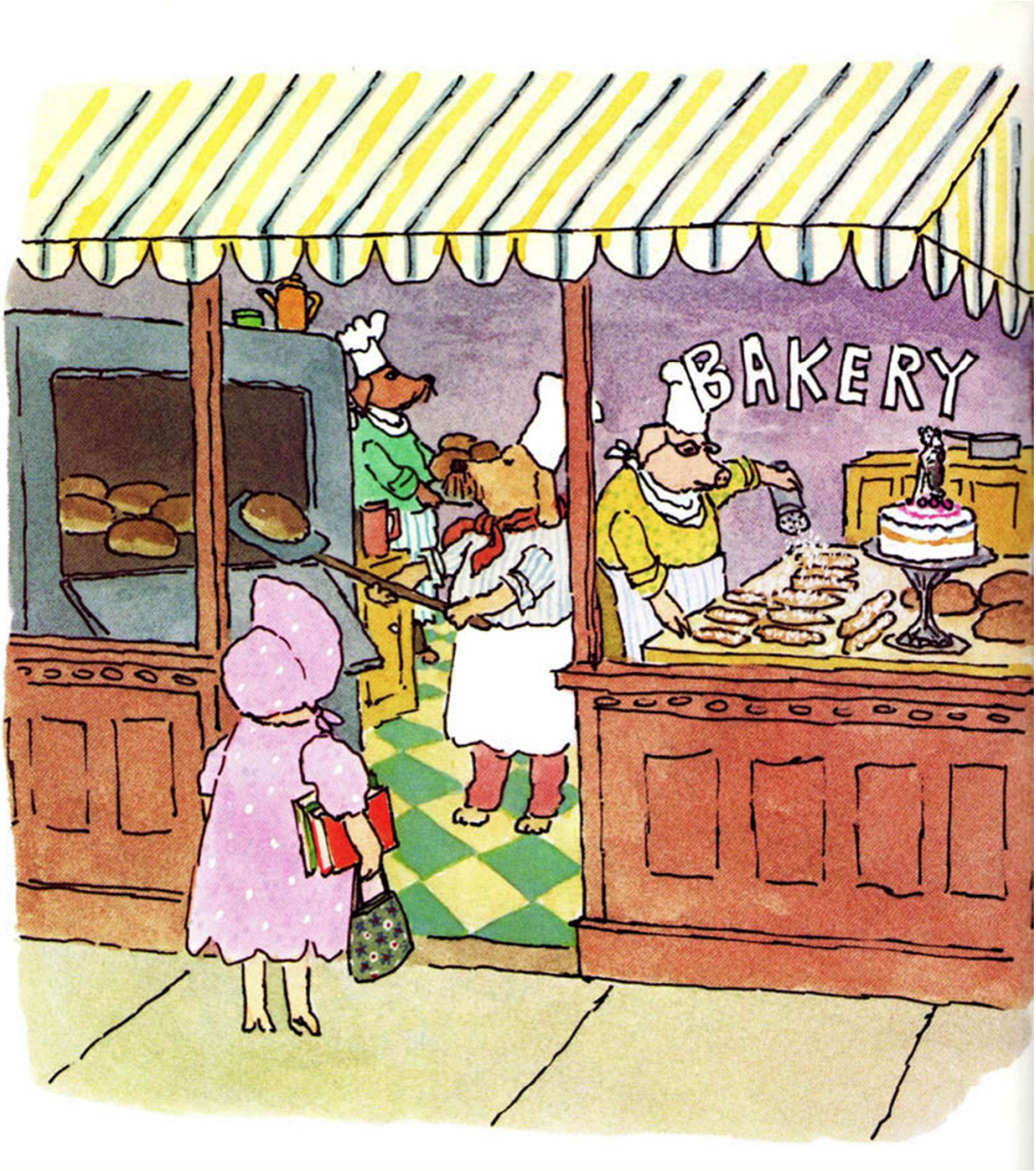

उसने सफाई कर्मचारियों को सड़क की सफाई करते हुए देखा.

उसने बेकरी वाले को भट्टी में से गर्म-गर्म डबलरोटी और चीनी चिपके बन्स निकालते हुए देखा.

आगे सड़क पर उसने एक गोदाम में लोगों को, घोड़े की नालों को ज़मीन में धंसी एक डंडी पर फेंकते और खेलते हुए देखा. खेलते वक़्त वो तम्बाकू पी रहे थे.

थोड़ी देर के बाद वो अपने स्कूल और घर के बीच स्थित छोटे से जंगल में बैठी. वसंत का महीना था. सब तरफ रंग-बिरंगे फूल खिले थे. गर्म हवा उसे हल्के-हल्के छू रही थी. उसे लगा कि जल्द वो खुद, एक फूल में बदल जायेगी. उसे अपनी पोशाख फूल की पंखुड़ियों जैसी हल्की महसूस होने लगीं.

“मुझे यहाँ सबकुछ बड़ा अच्छा लग रहा है,” उसने खुद से कहा.

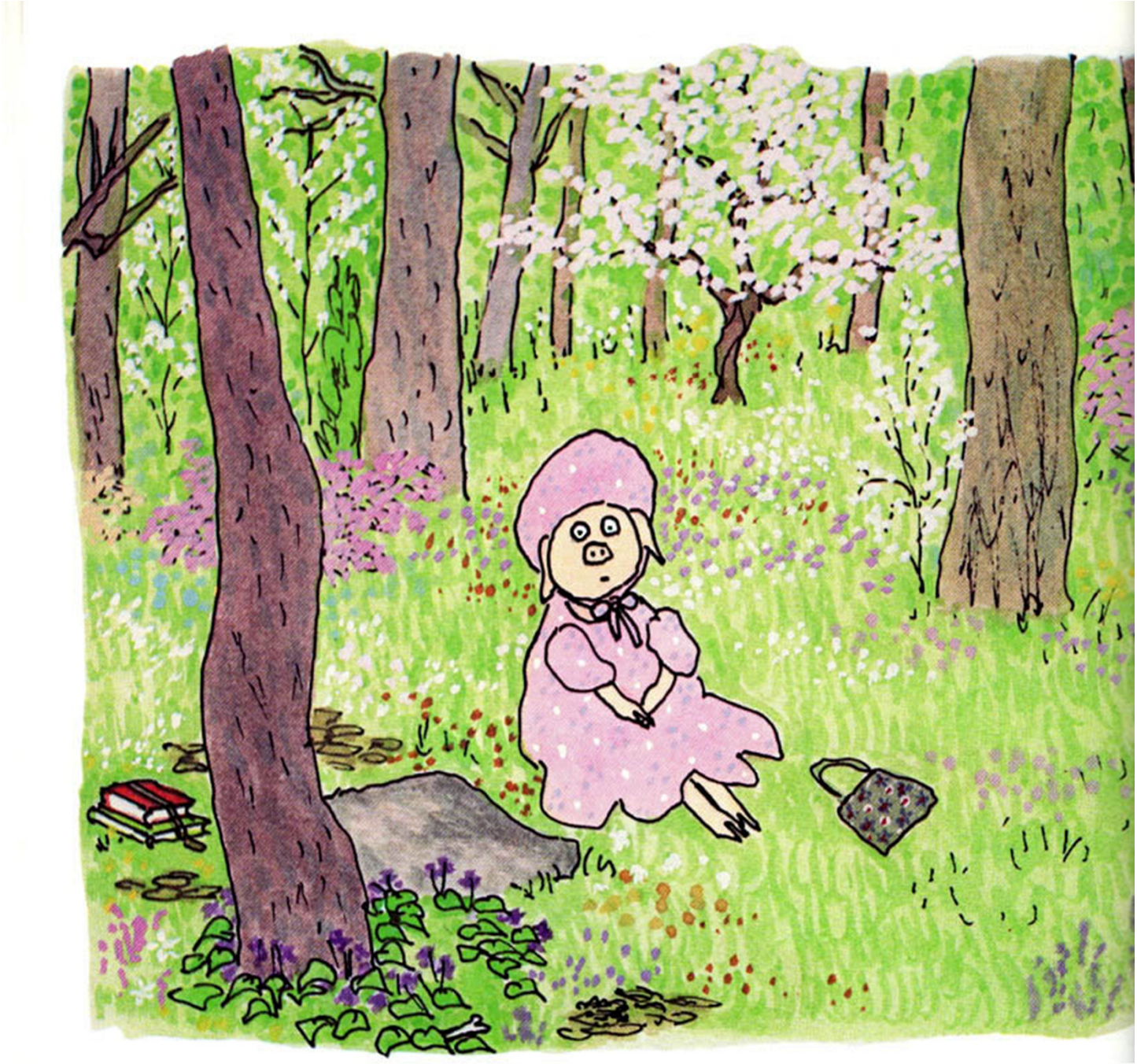

“मुझे भी,” किसी आवाज़ ने उत्तर दिया.

पर्ल ने अब सीधे होकर, इधर-उधर देखा. उसे वहां कोई दिखाई नहीं दिया.

“तुम कौन हो? कहाँ हो?” उसने पूछा.

“ज़रा नीचे देखो,” उसे उत्तर मिला. पर्ल ने तब नीचे देखा. “मैं एक हड्डी हूँ.

मैं तुम्हारे दाईं ओर पेड़ के पास नीले फूलों की क्यारी में पड़ी हूँ.”

फिर पर्ल ने छोटी हड्डी को देखा. “तुम तो बोल सकती हो?” उसने हल्के से पूछा.

“मैं हर भाषा में बोल सकती हूँ,” हड्डी ने कहा. “कहो तो तुमसे स्पेनिश में बोलूं? या फिर जर्मन में बोलूं? मैं हरेक आवाज़ की नक़ल कर सकती हूँ.”

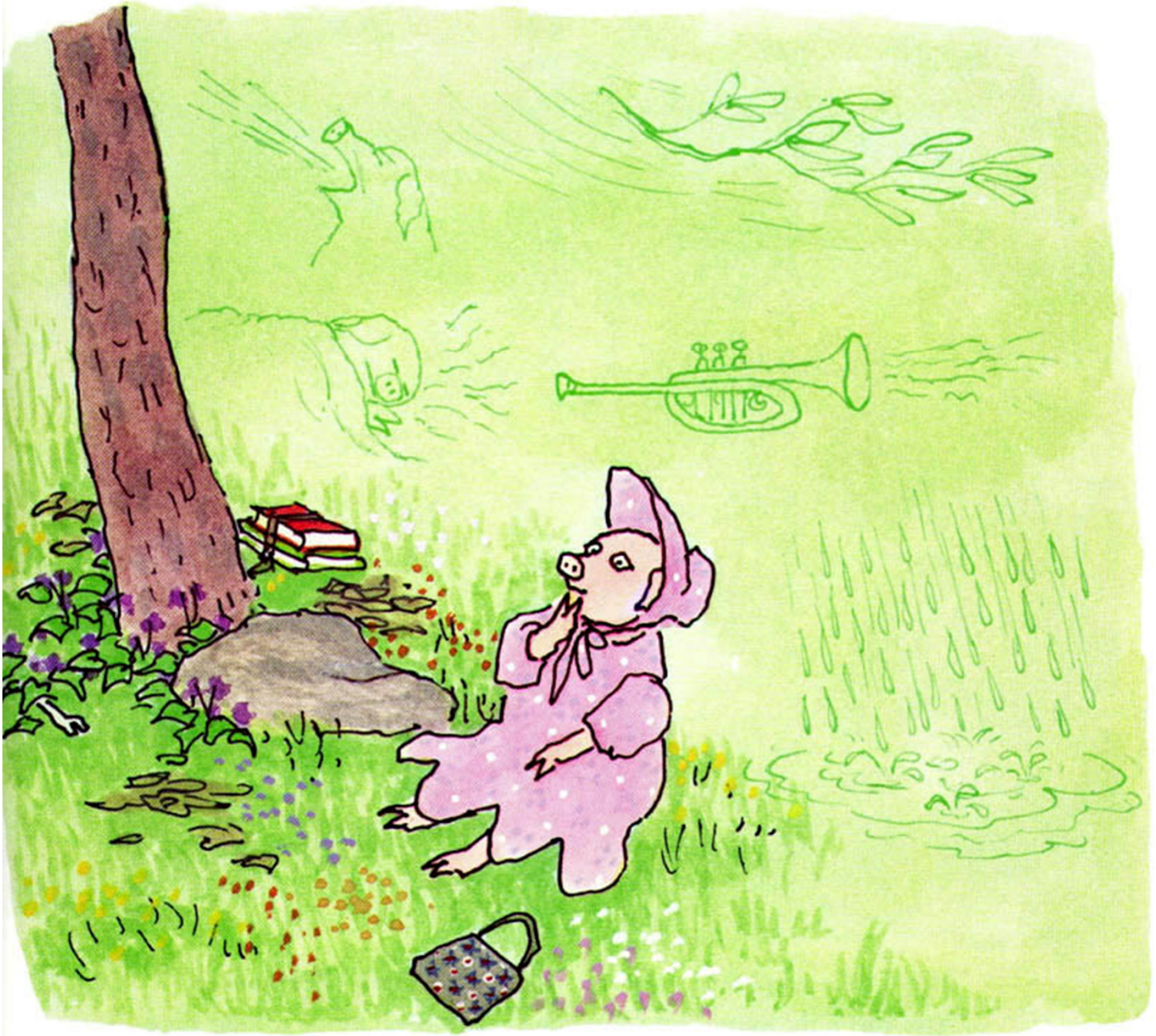

फिर हड्डी ने बिगुल - जो सैनिकों के लेफ्ट-राईट करते समय बजता है, की आवाज़ निकाली. हड्डी ने सर-सर हवा चलने, और फिर बारिश गिरने की आवाज़ निकाली. फिर उसने खर्राटे भरे और छींका भी.

पर्ल ने जो कुछ देखा और सुना, उसे उसपर यकीन नहीं हुआ.

“पर तुम तो एक हड्डी हो,” उसने कहा. “फिर तुम छींक कैसे सकती हो?”

“मुझे नहीं पता,” हड्डी ने उत्तर दिया. “मैंने तो यह दुनिया नहीं बनाई.”

“क्या मैं तुम्हें अपने साथ घर ले चलूँ, निराली हड्डी?” पर्ल ने पूछा.

“ज़रूर,” हड्डी ने कहा. “मैं बहुत समय से यहाँ पर अकेली पड़ी हूँ. इस अगस्त में मुझे यहाँ पड़े-पड़े एक साल हो जाएगा.

मैं एक जादूगरनी की टोकरी में से यहाँ गिर पड़ी थी. गिरने के बाद अगर मैं जोर से चिल्लाती, तो जादूगरनी मुझे उठा लेती. पर मैं अब जादूगरनी के पास और ज्यादा रहना नहीं चाहती थी. वो जादूगरनी क्या-क्या नहीं करती थी – वो हर रोज़ खाने में लहसुन और घोंघे पकाती थी. वो बार-बार अपने घूंटनों में दर्द की शिकायत करती थी और हमेशा बेमतलब के सवाल पूंछती थी. मुझे तुम जैसी जिंदादिल और युवा लड़की के साथ रहना कहीं ज्यादा अच्छा लगेगा.”

फिर पर्ल ने उस हड्डी को उठाकर हल्के से अपने बटुए में रख़ लिया. उसने पर्स खुला ही रखा जिससे वो अपनी बातचीत ज़ारी रख़ सके. उसके बाद वो घर की ओर चली. वो स्कूल की किताबों को घास पर ही रखा भूल गयी.

वो हड्डी को अपने माता-पिता को दिखाने को उत्सुक थी. उनकी प्रतिक्रिया क्या होगी? उसका भी पर्ल को सही अंदाज़ था. जब वो बोलने वाली हड्डी के बारे में बताएगी तो उसकी माँ कहेंगी, "तुम सिर्फ उसकी कल्पना कर रही हो," उसके पिता ज़रूर उसकी बात से सहमत होंगे. फिर हड्डी बोलकर उन दोनों को आश्चर्य में डाल देगी.

वसंत की धूप में, हरी पत्तियां चमक रही थीं. मेंढकों की टर्र-टर्र सुनाई दे रही थी.

"आज का दिन वाकई बहुत सुहाना है," पर्ल ने खुद से कहा, "आज कितनी आश्चर्यजनक बात हुई – कि तुम मुझे मिलीं."

"देखो, मैंने तुम्हें कैसे खोजा!" हड्डी ने उत्तर दिया. फिर हड्डी एक धुन गुनगुनाने लगी, जिससे पर्ल का रास्ता आसानी से कट गया.

पर यह ख़ुशी बहुत देर तक कायम नहीं रही. अचानक एक बड़े पत्थर के पीछे से कुछ चोर अपनी बंदूकें और छुरियां लेकर कूदे. वो कौन थे?
पर्ल को कुछ समझ ही नहीं आया क्यूंकि वे लम्बे चोगे पहने थे और उनके मुंह मुखोटों से ढंके थे. पर वो बेहद डरावने थे और जोर-जोर से चिल्ला रहे थे.

“अपना पर्स हमारे हवाले करो!” उनमें से एक ने आदेश दिया.

पर्ल ख़ुशी-ख़ुशी अपना पर्स उन्हें दे देती और उन चोरों से छुटकारा पाती. पर वो उन्हें अपनी हड्डी नहीं देना चाहती थी.

“तुम मेरा पर्स नहीं ले सकते हो,” उसने कहा. उसे अपनी बहादुरी पर खुद आश्चर्य हो रहा था.

“उसके अन्दर क्या है?” दूसरे चोर ने पूछा और अपनी बन्दूक पर्ल के सिर पर रखी.

“इसके अन्दर मैं हूँ!” हड्डी घुर्राई.

फिर हड्डी, सांप जैसे फुंकारने लगी और शेर जैसे दहाड़ने लगी.

यह सुनकर चोर एक सेकंड के लिए भी वहां नहीं रुके. वो तुरंत भाग लिए. वो और ज्यादा डरावनी आवाजें नहीं सुनना चाहते थे. वो किस रास्ते खिसके यह भी किसी को पता नहीं. यह देख पर्ल हंसने लगी. हड्डी भी हंसने लगी.

फिर उन दोनों ने अपना सफ़र ज़ारी रखा. रास्ते भर, अभी जो कुछ हुआ था वो उसके बारे में बातें करते रहे और मज़ाक करते रहे. तभी पेड़ के पीछे से एक लोमड़ी कूदी और उसने उनका रास्ता रोका. लोमड़ी के कोट में एक बैंगनी फूल लगा था और वो एक हाथ में छड़ी और दूसरे हाथ में अपना हैट पकड़े थी. वो ज़ोरों से हंस रही थी जिससे सारी दुनिया उसके लम्बे और नुकीले सफ़ेद दांतों को देख सके.

“रुको,” लोमड़ी ने कहा. पर्ल डर से सहम गई. “मैं तो तुम्हारी कब से तलाश में थी,” लोमड़ी ने कहा. “तुम जवान, मोटी और मुलायम हो. आज रात मैं तुम्हें खाऊँगी.” फिर लोमड़ी ने पर्ल को दबोचने की कोशिश की.

“उसे छोड़ दे, बदमाश,” हड्डी चिल्लाई, “नहीं तो मैं तेरे कान काट लूंगी!” “यह कौन बोल रहा है?” लोमड़ी ने आश्चर्य से पूछा.

“मैं एक भूखा मगरमच्छ हूँ, जिसे लोमड़ी का ताज़ा गोश्त बेहद पसंद है!” हड्डी ने उत्तर दिया.

चालाक लोमड़ी चोरों जैसे, जल्दी चाल में आने वाली नहीं थी. उसे आसपास कोई भयानक मगरमच्छ नज़र नहीं आया. उसने पर्ल के पर्स में झाँककर देखा, क्यूंकि उसमें से ही तो आवाज़ आ रही थी. फिर लोमड़ी ने हड्डी को पर्स से बाहर निकाला. “अरे! यह तो गज़ब की हड्डी है! बोलने वाली हड्डी! मुझे ऐसी हड्डी की कब से तलाश थी.” फिर लोमड़ी ने उस हड्डी को अपनी जेब में रख़ लिया. हड्डी रोई और उसने बहुत शोर मचाया पर उससे कुछ फर्क नहीं पड़ा.

फिर लोमड़ी, पर्ल को घसीटते हुए अपने घर की ओर चली. पर्ल जोर-जोर से रो रही थी. उसका रोना सुनकर लोमड़ी को कुछ दुःख ज़रूर हुआ, पर वो रात को उसे ज़रूर खाना चाहती थी.

“कृपाकर मिसेस लोमड़ी,” पर्ल ने विनती की, “मरने से पहले कुछ देर के लिए तो मेरी हड्डी मुझे लौटा दें?”

“ठीक है,” लोमड़ी ने कहा. लोमड़ी को इतना कोमल ह्रदय होने पर गुस्सा भी आ रहा था. पर अंत में उसने पर्ल को उसकी हड्डी लौटा दी, जिसे पर्ल ने वापिस अपने पर्स में रखा.

“आपको एक सुन्दर युवा लड़की को जिंदा रहने देना चाहिए,” हड्डी चिल्लाई. “आपको अपनी करतूत पर शर्म आनी चाहिए!”

लोमड़ी हंसी. “भला मुझे क्यूं शर्म आए? मैं जो हूँ, मैं वैसी ही रहूँगी. मैंनें तो दुनिया को नहीं बनाया है.”

फिर हड्डी ने लोमड़ी को गाली देना शुरू किया. “तुम कायर हो!” वो घुर्राई. “बदबूदार नाली के कीड़े, कमीने!!”

गालियों की यह बौछार लोमड़ी को बिलकुल पसंद नहीं आई. “तुम चुप बैठो, नहीं तो मैं तुम्हें भी खा जाऊँगी,” लोमड़ी ने गरजते हुए कहा. “कितना अच्छा लगेगा मुझे एक बोलने वाली हड्डी को चूसना. फिर वो दर्द से चिल्लाएगी.”

बाकी रास्ते हड्डी चुप रही, पर्ल ने भी अपने मुंह नहीं खोला.

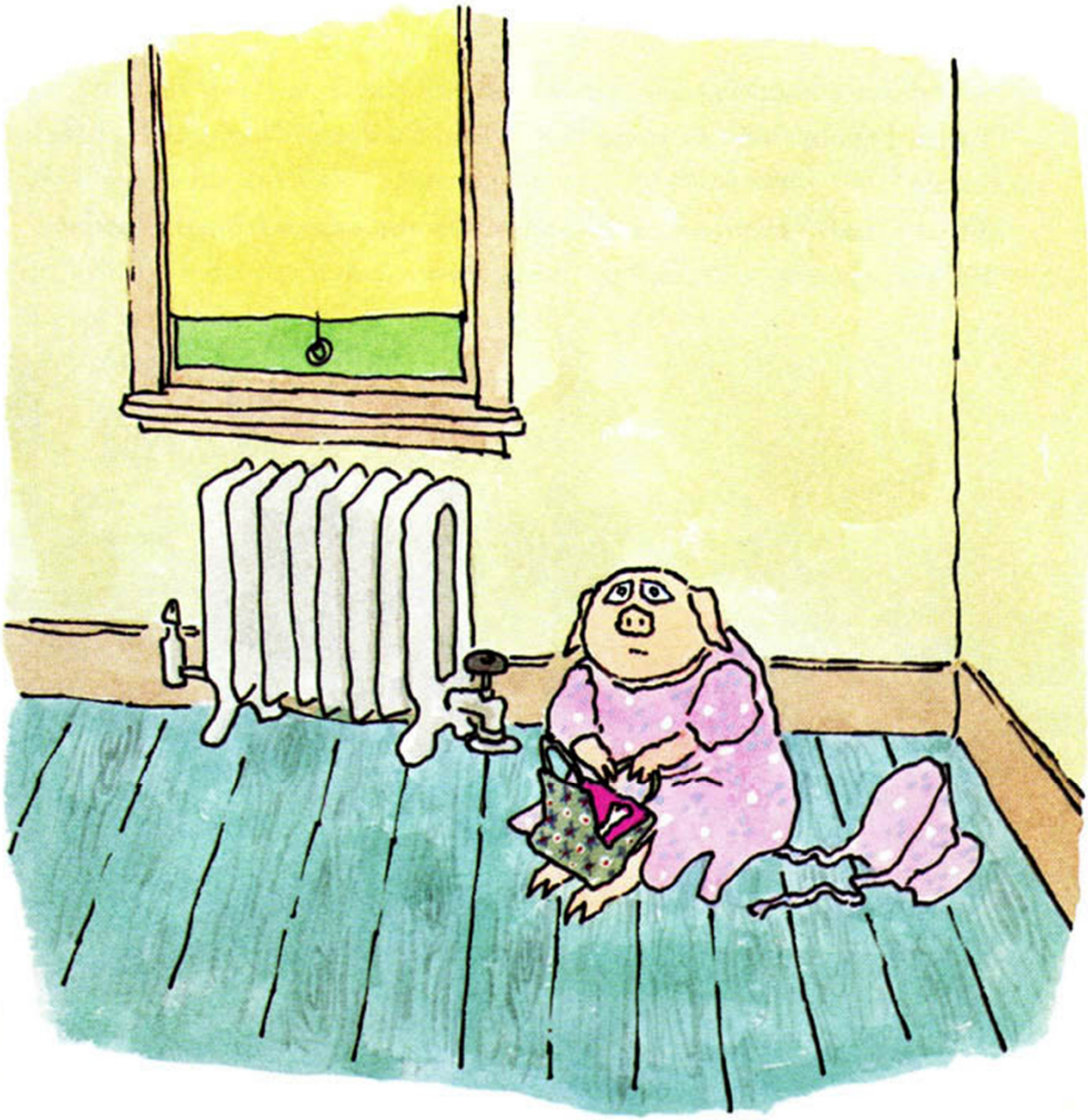

जब वो लोमड़ी के घर पहुंचे तब लोमड़ी ने पर्ल को उसकी हड्डी के साथ एक खाली कमरे में धकेला और फिर कमरे का दरवाज़े बंद कर दिया. पर्ल ज़मीन पर बैठी दीवार को घूरती रही.

“मुझे पता है, तुम्हें कैसा लग रहा होगा,” हड्डी ने हल्के से फुसफुसाया.

“मैंने अभी तो अपनी ज़िन्दगी शुरू की है,” पर्ल ने दबी आवाज़ में जवाब दिया. “मैं इतनी जल्दी मरना नहीं चाहती.”

“मुझे पता है,” हड्डी ने कहा.

“क्या बचने के लिए हम कुछ कर नहीं सकते हैं?” पर्ल ने पूछा.

“काश! मेरे दिमाग में कोई तरकीब आती,” हड्डी ने कहा, “पर मेरा दिमाग बिलकुल काम नहीं कर रहा है. मुझे बहुत बुरा भी लग रहा है. मैं भी दुखी हूँ.”

फिर किचन में से कुछ आवाज़ सुनाई दी. “वो आवाज़ किसकी है?” पर्ल ने पूछा.

“लगता है वो चाकू में धार लगा रही है,” हड्डी फुसफुसाई.

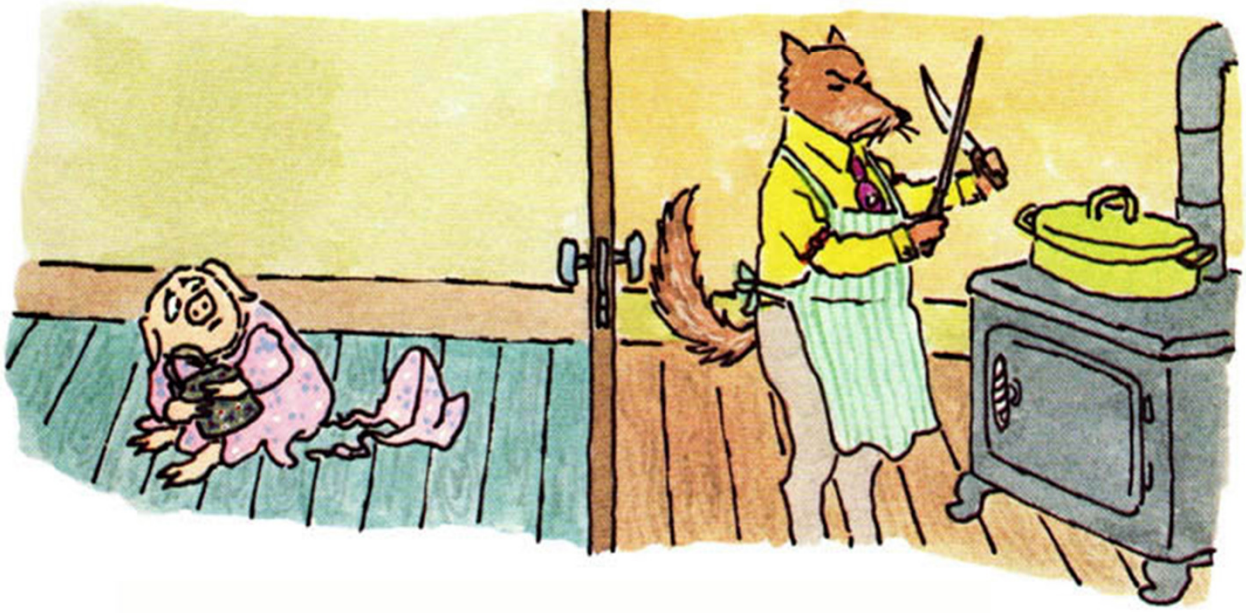

“अरे बाप रे!” पर्ल रोने लगी. “और वो क्या आवाज़ है?”

“लगता है उसने चूल्हे में लकड़ी डाली हैं,” हड्डी ने उत्तर दिया.

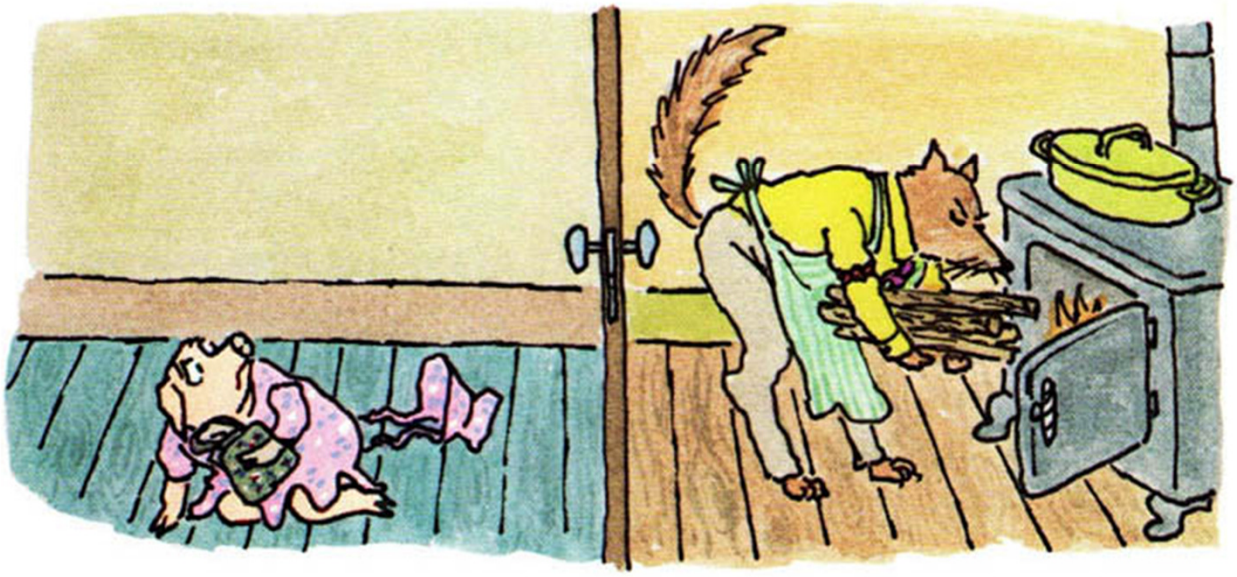

“मुझे लगता है अब ज्यादा वक्त बाकी नहीं बचा है,” पर्ल ने कहा. उसे सिरके और तेल के खुशबू भी आ रही थी. लोमड़ी खाने के साथ-साथ सलाद की भी तैयारी कर रही थी. फिर डर के मारे पर्ल ने हड्डी को अपने सीने से लगा लिया.

“हड्डी, मुझसे कुछ ऐसा कहो, जिससे मुझे कुछ शांति मिले.”

“तुम मेरे लिए बहुत प्रिय हो,” हड्डी ने कहा.

“मुझे भी तुम बेहद प्रिय हो!” पर्ल ने जवाब दिया. फिर उसे दरवाज़े में चाभी लगने की आवाज़ सुनाई दी. उसके गले से और कोई शब्द बाहर नहीं निकला. दरवाज़े के ओर देखने की तक उसकी हिम्मत नहीं हुई.

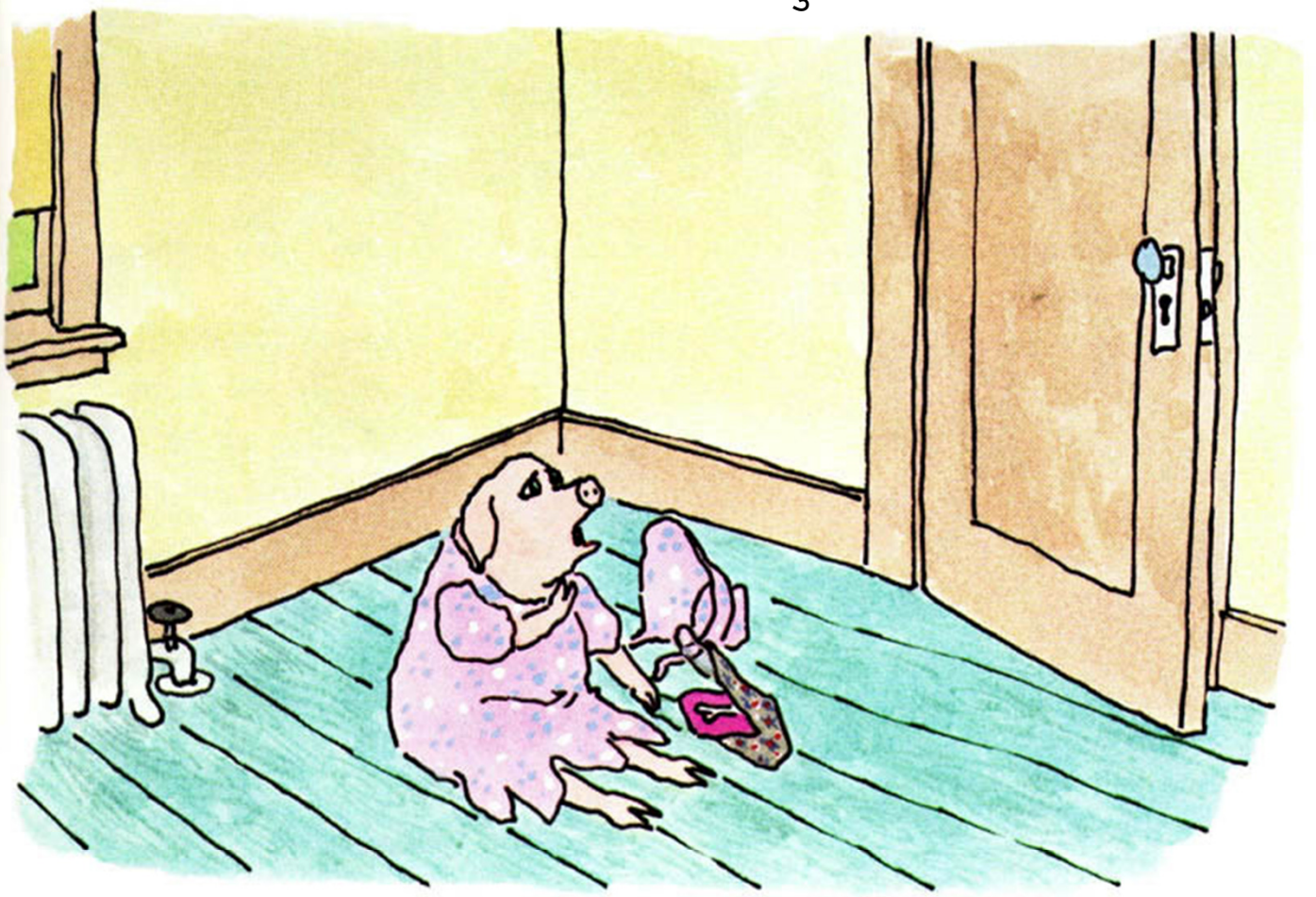

“बहादुरी से काम लो,” हड्डी ने फुसफुसाया. मगर पर्ल बेचारी डर के मरे बुरी तरह थरथरा रही थी.

उसे पकड़ कर किचन में ले जाया गया जहाँ चूल्हे की आग धू-धू करके जल रही थी.

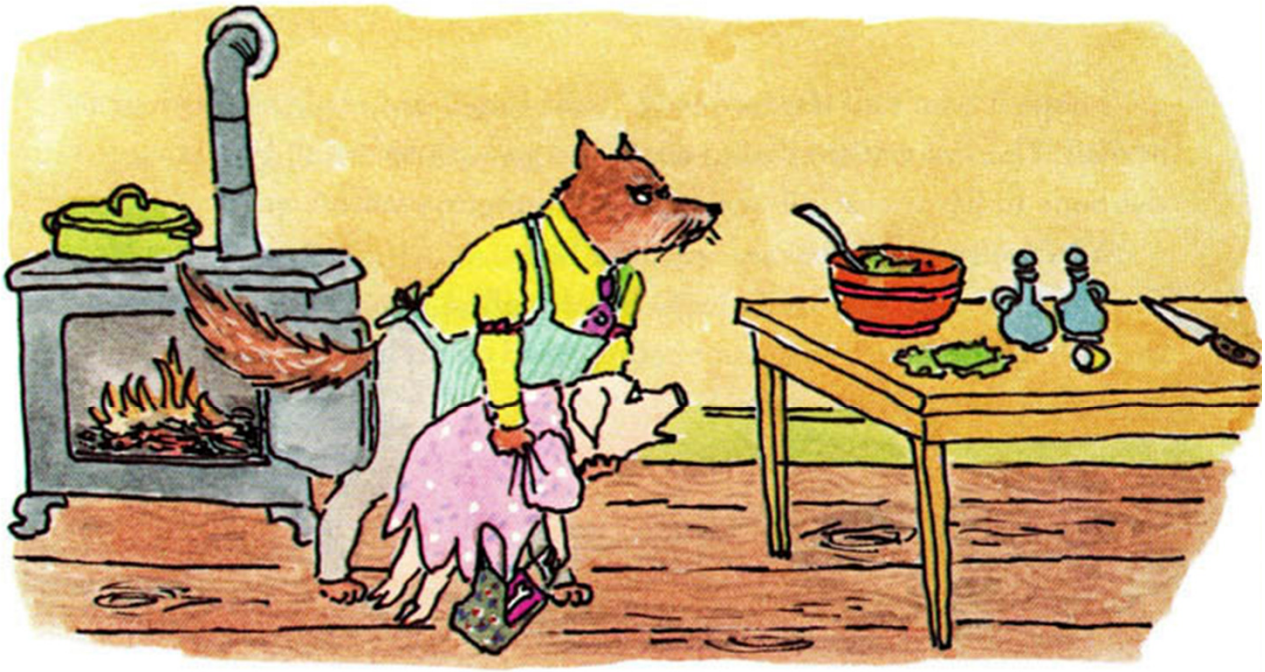

“मुझे तुम्हारे साथ यह व्यवहार करते हुए दुःख हो रहा है,” लोमड़ी ने एक लम्बी साँस लेते हुए कहा. “मेरा तुमसे कोई व्यक्तिगत बैर नहीं है.”

“यिब्बम!” हड्डी ने अचानक कहा. उसे भी पता नहीं था कि उसने यह क्यूं कहा.

“यह क्या आवाज़ है?” लोमड़ी ने घबराते हुए कहा.

“यिब्बम सिबिब्ब्ल!” हड्डी ने ज़ोर से दोहराया. **“जिबरक सिबिब्ब्ल दिगरे!”** और फिर अचानक कुछ अनापेक्षित हुआ. लोमड़ी कई इंच छोटी हो गई!

“अलाम्बम चिनूक बेबोपित्त गीबोज़िल!” हड्डी ने अपना मंत्र ज़ारी रखा, और उससे लोमड़ी खरगोश के आकार की हो गई. जो कुछ हुआ उसपर किसी को भी यकीन नहीं हुआ – न पर्ल को, न लोमड़ी को और न ही हड्डी को. पर यह सब हड्डी के शब्दों से ही हुआ था.

“अदूनिस इश्गूलक कीबोक्किन यिबप्प!” हड्डी का मंत्र जारी रहा. अब लोमड़ी, और उसके कपड़े, सब चूहे के नाप के हो गए थे.

“स्क्रेब्बूनित!” हड्डी ने आदेश दिया. उसे सुनते ही वो चूहा – जो असल में लोमड़ी थी, झट से एक बिल में घुस गया.

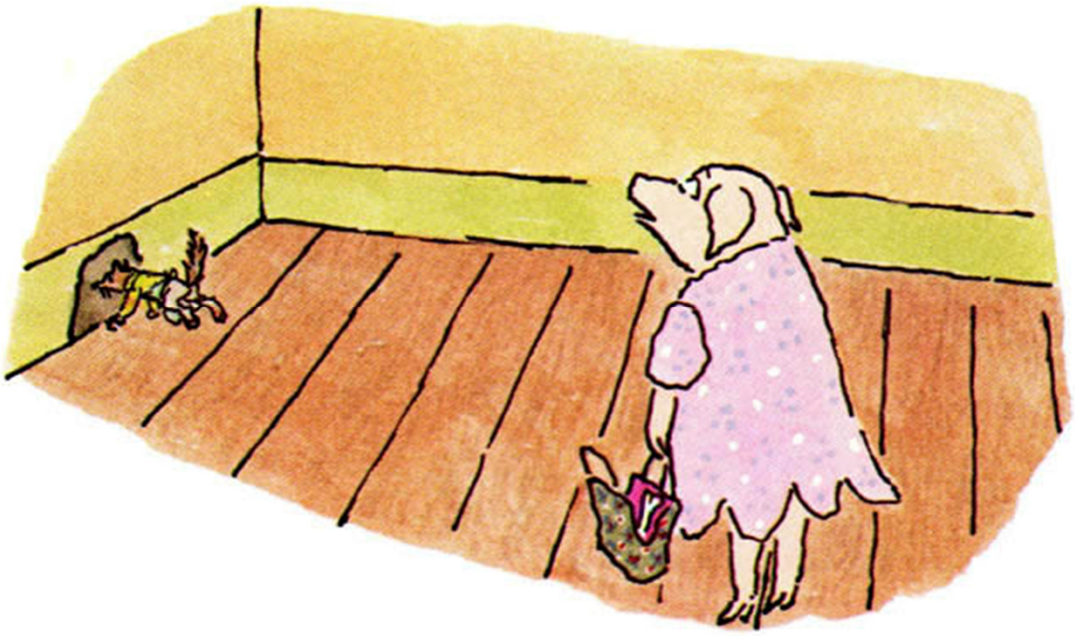

“मुझे पता नहीं था कि तुम जादू भी जानती हो!” पर्ल ने तेज़ी से सांस लेते हुए कहा.

“मुझे भी नहीं पता था,” हड्डी ने कहा.

“फिर तुमने वो शब्द कहाँ से सीखे?”

“काश, मुझे पता होता,” हड्डी ने कहा. “वो बस मेरे मुंह से निकल पड़े यूं कहो फूट पड़े. शायद उस जादूगरनी के साथ रहते-रहते वो शब्द मेरे दिमाग में घुस गए होंगे.”

“तुम वाकई में गज़ब की हड्डी हो,” पर्ल ने कहा, “मैं आज का दिन ज़िन्दगी भर नहीं भूलूंगी.”

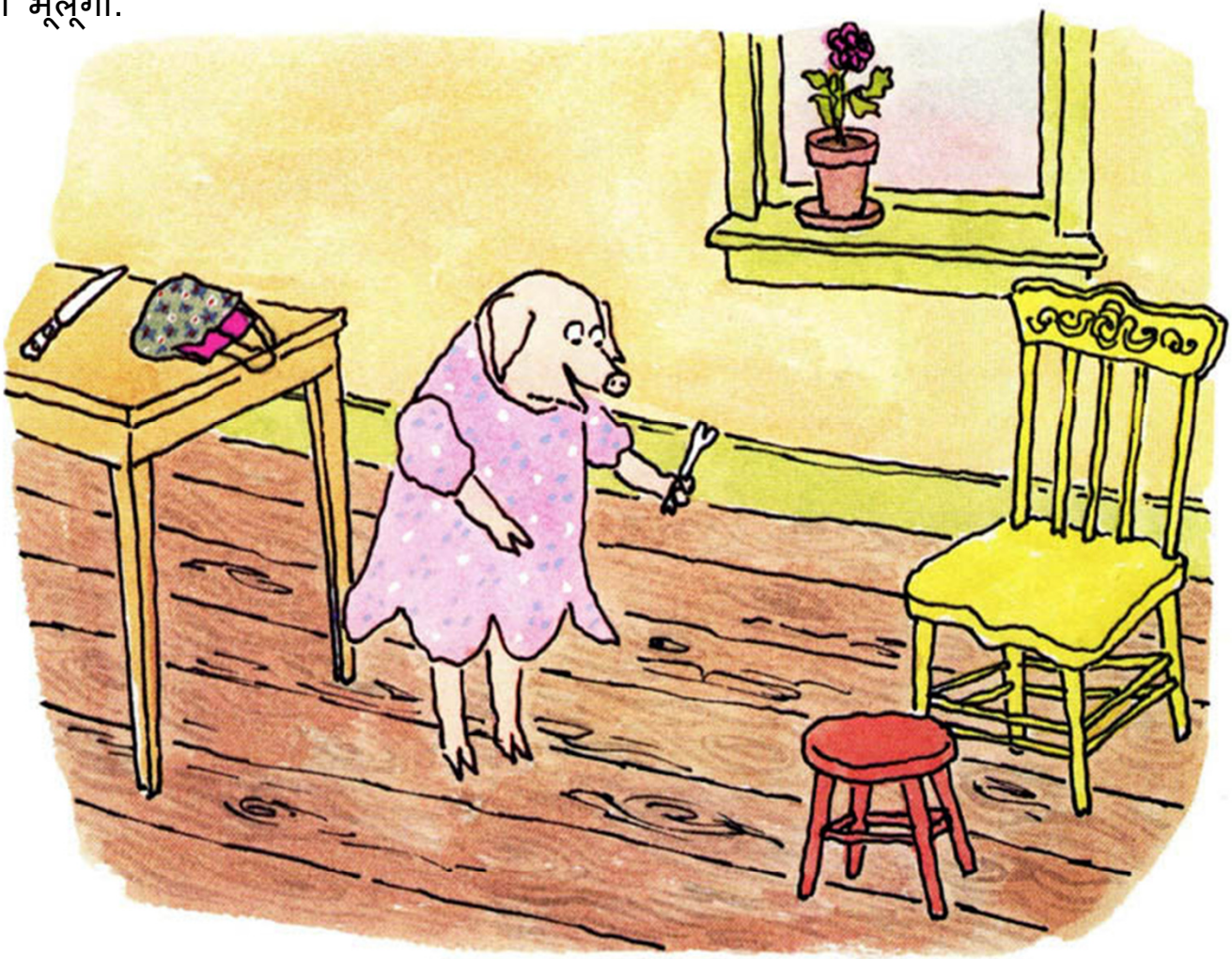

पर्ल जब तक घर पहुंची तब तक अँधेरा हो चुका था. जैसे ही दरवाज़ा खुला पर्ल को, उसकी माँ ने अपने गले से चिपकाया. फिर पिता ने भी उसे गले लगाया.

“तुम कहाँ थीं?” दोनों जानने को बेचैन थे. “हम तो तुम्हारी चिंता करते-करते बेहाल हो गए.”

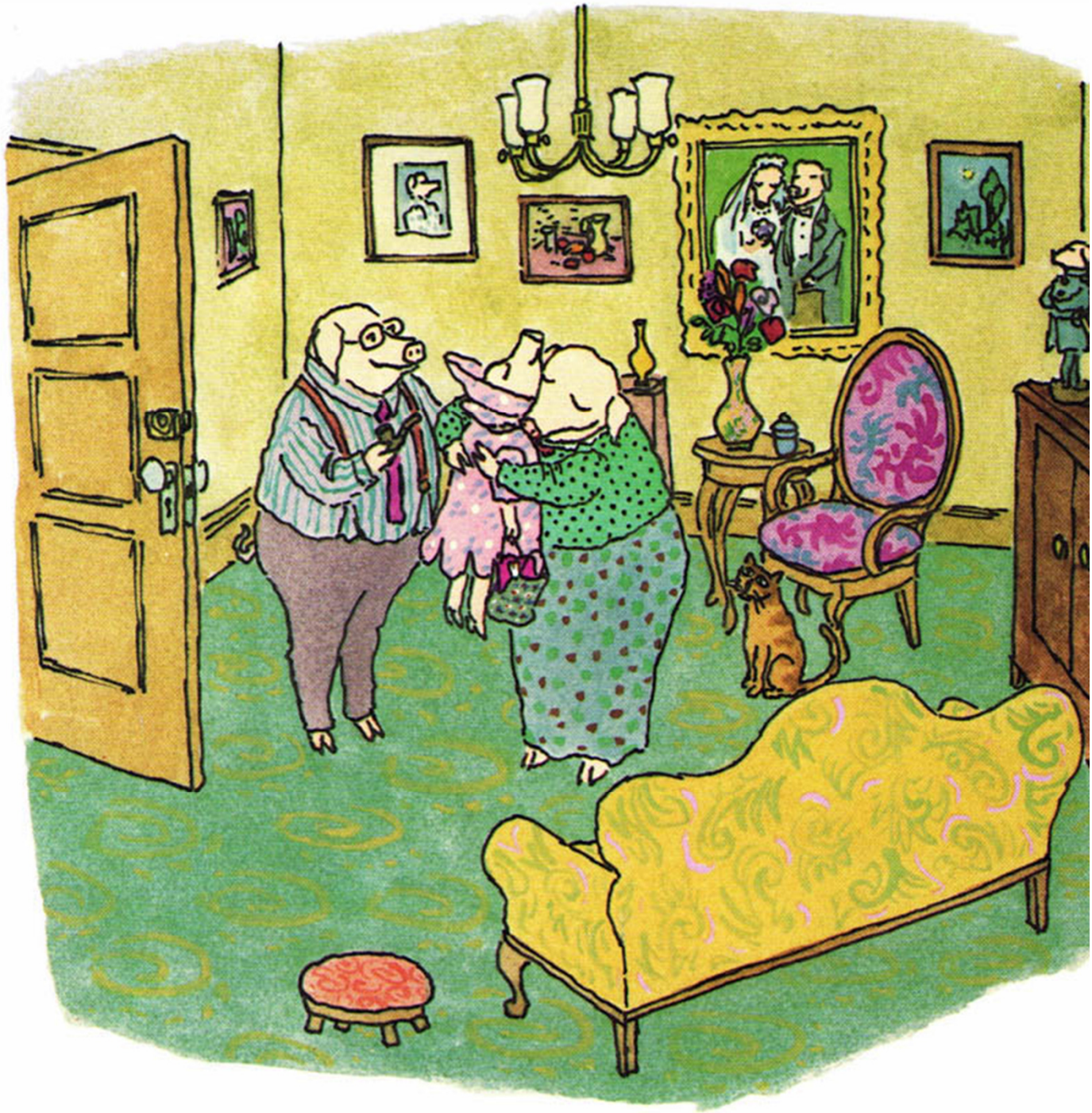

पर्ल क्या कहे? उसे शुरू में कुछ समझ में ही नहीं आया. फिर उसने हड्डी उठाई. “यह हड्डी,” उसने कहा, “बोल सकती है!” और जैसे पर्ल ने सोचा था, उसकी माँ ने कहा, “अच्छा, बोलने वाली हड्डी? देखो पर्ल, क्या तुमने उसकी कल्पना की है.” उसके पिता ने भी कुछ-कुछ वही कहा. और जैसे पर्ल ने सोचा था वैसे ही हड्डी ने यह कहकर सबको चौंकाया, “आपकी बेटी बहुत होनहार है!”

इससे पहले कि पर्ल के माँ-बाप इस धक्के से उबर पाते, पर्ल ने उन्हें पूरे दिन की राम कहानी सुनाई और कैसे हड्डी ने उसे बचाया यह भी बताया. पर्ल के माँ-बाप के लिए उस पर यकीन करना कठिन था. पर धीरे-धीरे वे उसके अभ्यस्त हुए.

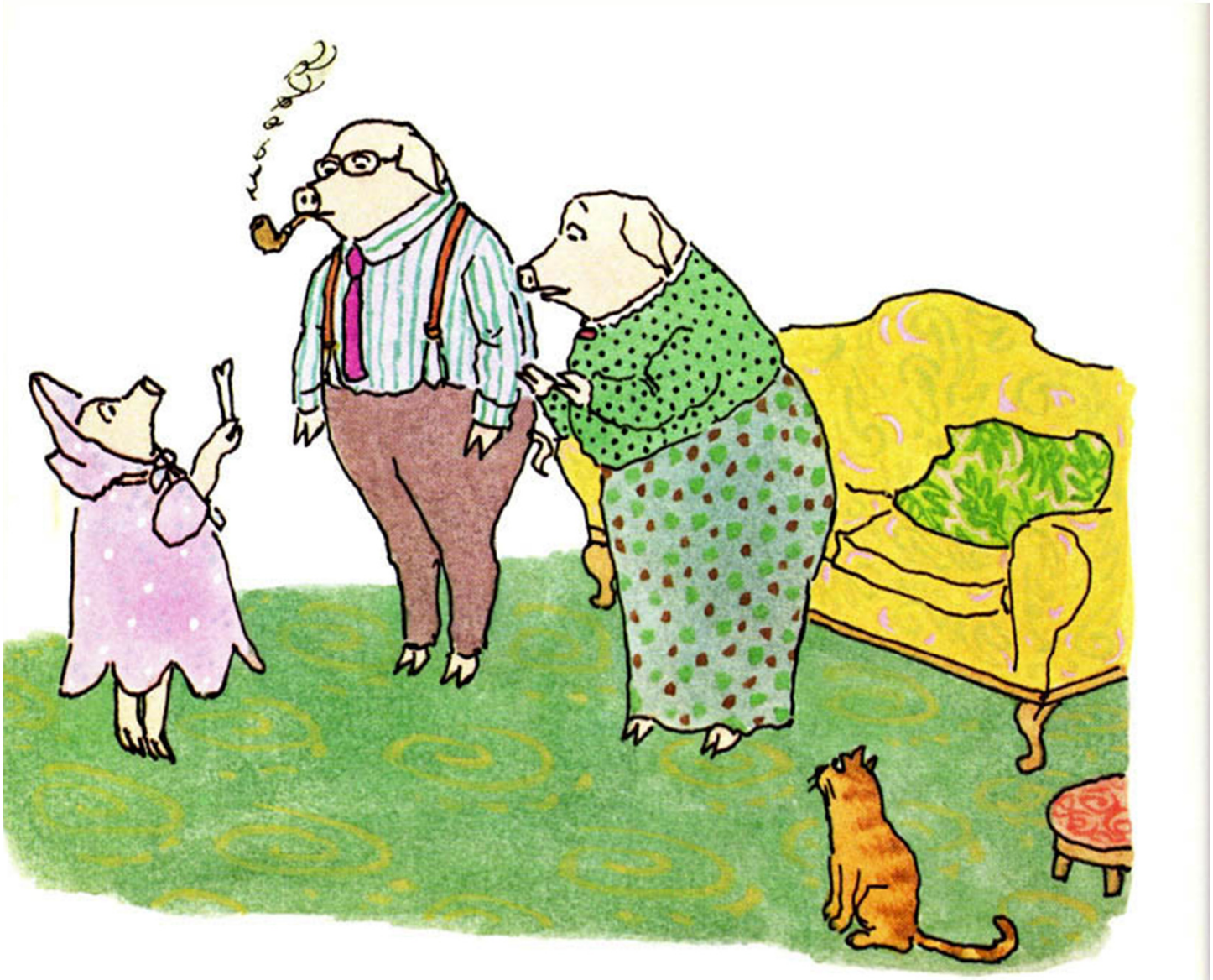

धीरे-धीरे वो हड्डी परिवार का एक हिस्सा बन गई. हड्डी को बीच की मेज़ पर एक चांदी की थाली में आदर-सत्कार के साथ रखा गया. सोते समय पर्ल हड्डी को रोजाना अपने साथ पलंग पर ले जाती. हड्डी, पर्ल को सुन्दर लोरियां और संगीत सुनाकर सुलाती.

जब कोई घर में अकेला होता तो हड्डी उससे बातचीत करने के लिए हमेशा मौजूद होती. वो जब चाहें सुन्दर संगीत सुन सकते थे. वैसे कभी-कभी उन्हें न चाहते हुए भी संगीत सुनना पड़ता था!

कैलडीकोट हॉनर बुक